Volume-1, Issue-3, June 2025

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत: विविध संदर्भ

शिवलाल अहिरवार, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरी, जिला—सागर (मध्यप्रदेश)

भूमिका

मानव सभ्यता के इतिहास में अगर देखें तो ऐसे अनेक विचार रहे हैं जिन्होंने किसी राष्ट्र की दिशा और उसकी प्रगति की गति को निर्धारित किया। भारतीय समाज के लिए स्वदेशी ऐसा ही एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत रहा है, जिसने न केवल आर्थिक संरचना को प्रभावित किया, यद्धपि सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक मूल्य और राष्ट्रीय आत्मा को भी बल प्रदान किया है। स्वदेशी का भाव ही हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है एवं स्थानीयता के प्रति सम्मान जगाता है और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाला मार्ग प्रशस्त करता है।

वर्तमान वैश्वीकृत विश्व में जहाँ उत्पादन और बाजार की सीमाएँ निरंतर धुंधली हो रही हैं वहीं दुसरी ओर स्वदेशी का महत्व और भी बढ़ गया है। आज यह केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि राष्ट निर्माण की चेतना बन चुका है।

स्वदेशी का अर्थ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और वैचारिक विस्तार

स्वदेशी शब्द का तात्पर्य है देश में निर्मित वस्तुएँ, देश में विकसित विचार और देश—हित में नियोजित नीतियाँ। इस धारणा का बीज प्राचीन भारतीय चिंतन में निहित है। प्राचीन अर्थशास्त्र, लोककला, वस्त्र, कृषि और औद्योगिक कौशल सबमें स्वावलंबन की प्रेरणा निष्चित ही विद्यमान रही।

किन्तु इसका सक्रिय रूप 1905 के बंग—भंग विरोध के समय दिखाई दिया। यह आंदोलन ब्रिटिश औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध आर्थिक स्वाधीनता का उद्घोष था। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुकार **स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है** के साथ स्वदेशी को जनता का व्यापक समर्थन मिला।

तब महात्मा गांधी ने स्वदेशी को केवल आर्थिक आंदोलन नहीं माना, अपितु इसे आत्म—शोधन, आत्म—नियंत्रण और आत्म—साक्षात्कार की दिशा में एक आध्यात्मिक साधना माना। चरखा उनके लिए उद्योग नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता का प्रतीक था।

स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव और परिवर्तन

स्वदेशी आंदोलन ने आधुनिक भारत की संरचना पर कई प्रकार से प्रभाव डाला है जैसे —

1. आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन:

1. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर लोगों ने देशी उत्पादों, हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों को अपनाया।

Volume-1, Issue-3, June 2025

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

2. स्वदेशी के कारण अनेक घरेलू उद्योगों को पुनर्जीवन मिला।
3. ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नयी ऊर्जा प्राप्त हुई।

2. सामाजिक स्तर पर प्रभाव:

1. स्वदेशी ने आत्मसम्मान और स्वाभिमान की चेतना को जागृत किया।
2. यह आंदोलन वर्गदृविभाजनों से ऊपर उठकर जनदृएकता का माध्यम बना।
3. समाज में देश–भक्त उपभोग की नई अवधारणा विकसित हुई।

3. सांस्कृतिक और भाषायी प्रभाव

1. स्वदेशी विचार धारा ने हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिया।
2. भारतीय परंपराओं, कला, कारीगरी और लोकसंस्कृति के पुनर्जीवन का माध्यम बना।
3. समकालीन समय में स्वदेशी की आवश्यकता

आज बहुराष्ट्रीय उद्योगों का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ चुका है। उपभोग की आदतें, उत्पादन की पद्धतियाँ और जीवनशैली वैश्विक बाजार द्वारा नियंत्रित हो रही है। ऐसे समय में स्वदेशी का महत्व अनेक गुना बढ़ जाता है। प्रधानमंत्री द्वारा आरम्भ वोकल फॉर लोकल टार्टअप इंडिया मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी योजनाएँ स्वदेशी विचार धारा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करने का लगातार प्रयास कर रहीं हैं।

डिजिटल तकनीक, रक्षा प्रणाली, अवकाश–प्रौद्योगिकी, औषधि निर्माण और कृषि क्षेत्र में स्वदेशी अनुसंधान भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ा रहा है।

बाबा रामदेव : स्वदेशी के सामाजिक–आर्थिक प्रवक्ता

बाबा रामदेव ने स्वदेशी को जन–आंदोलन का स्वरूप देने में विशिष्ट योगदान दिया है।

वे निरंतर सार्वजनिक मंचों पर विदेशी उत्पादों के बहिष्कार और भारतीय उद्योगों के समर्थन की बात करते रहे हैं। उनकी दृष्टि में स्वदेशी—

संस्कृति की रक्षा,

आर्थिक सुदृढ़ीकरण,

राष्ट्रीय स्वाभिमान,

और युवाओं की चेतना को जगाने का साधन है।

Volume-1, Issue-3, June 2025

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

पतंजलि योगपीठ संस्थान के माध्यम से उन्होंने आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, योग और स्वदेशी उत्पादों की विशाल श्रृंखला विकसित की है। इसके कारण ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों पर रोजगार के नए अवसर बढ़े तथा भारतीय उद्योगों के प्रति एक विश्वास का वातावरण निर्मित हुआ।

आर्थिक उन्नति में स्वदेशी की भूमिका:

भारत में स्वदेशी अपनाने से आर्थिक क्षेत्र में अनेक लाभ प्राप्त होते हैं—

1. रोजगार वृद्धि

स्थानीय उद्योगों, कुटीर इकाइयों और सूक्ष्म उद्यमों की प्रगति से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर बनते हैं।

2. विदेशी आयात पर नियंत्रण

देश में उत्पादन बढ़ने से आयात कम होता है, विदेशी मुद्रा की बचत होती है और व्यापार घाटा घटता है।

3. स्थानीय बाजार का विस्तार

जब धन देश के भीतर ही चक्रित होता है, तो आर्थिक प्रणाली स्थिर और मजबूत बनती है।

4. तकनीकी आत्मनिर्भरता

अनुसंधान और नवाचार बढ़ते हैं, जिससे देश अपनी आवश्यकताओं के अनुसार तकनीक विकसित कर सकता है।

5. सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण:

स्वदेशी उत्पाद भारतीय अदभुद कारीगरी और शिल्पकला को संरक्षित रखते हैं, जो वैश्विक स्तर पर हमारी पहचान को मजबूत भी करते हैं।

स्वदेशी और स्वावलंबन: एक भारतीय विकास–दृष्टि

स्वावलंबन का अर्थ है अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करना। यह अवधारणा स्वदेशी की आत्मा है।

स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने से—

व्यक्ति मेहनत और श्रम की प्रतिष्ठा समझता है,

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिलती है,

छोटे उद्योगों की रक्षा होती है,

और समाज में 'स्वदृसक्षम राष्ट्र' की भावना विकसित होती है।

आज जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक संकट लगातार सामने आ रहे हैं, स्वावलंबन भारत की स्थिरता और सुरक्षा के लिए अनिवार्य बन चुका है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, स्वदेशी जागरण मंच और अन्य संगठन 'स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकास–प्रणाली' की आवश्यकता पर बल देते हैं। उनके अनुसार आत्मनिर्भर ग्राम ही आत्मनिर्भर भारत का पथ प्रशस्त कर सकते हैं।

रोजगार, विकास और आत्मनिर्भरता: व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में रोजगार सृजन महत्वपूर्ण चुनौती है। स्वदेशी उद्योग इस समस्या के समाधान का मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

मोबाइल निर्माण क्षेत्र इसका उल्लेखनीय उदाहरण है, जहाँ भारत आज 99% तक घरेलू उत्पादन करने में सक्षम हो चुका है। इस परिवर्तन से लाखों युवाओं को रोजगार प्राप्त हुआ और आयात पर निर्भरता लगभग समाप्त हो गई।

इसी प्रकार परिधान, हस्तशिल्प, फर्नीचर, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि–यंत्र, फार्मा और रक्षा–सामग्री के क्षेत्रों में स्वदेशीकरण से न केवल आर्थिक वृद्धि हुई बल्कि भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा भी बढ़ी।

निष्कर्ष

स्वदेशी भारतीय जीवन–धारा का सतत प्रवाह है। यह राष्ट्र की आत्मा का वह स्वरूप है, जो हमें आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक गरिमा का मार्ग दिखाता है।

स्वदेशी उत्पाद अपनाने से—

- रोजगार बढ़ता है,
- आर्थिक शक्ति सुदृढ़ होती है,
- विदेशों पर निर्भरता कम होती है,
- स्थानीय उद्यमियों को प्रोत्साहन मिलता है,
- सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहती है,
- और राष्ट्र समग्र रूप से मजबूत बनता है।

प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह स्वदेशी वस्तुओं और सेवाओं को अपनाकर भारत की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति में अपनी सक्रिय भूमिका निभाए।

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

स्वदेशी केवल नीति नहींकृराष्ट्रभक्ति, आत्मसम्मान और प्रगति का मार्गदर्शन है। यह आत्मनिर्भर भारत की अनिवार्य नींव है, जो आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य का आधार बनेगी।

संदर्भ ग्रंथ–सूची—

1. वर्मा, के. (2018). भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वदेशी मॉडल. अवध प्रकाशन. pp. 67–95. भारतीय अर्थव्यवस्था में स्वदेशी उद्योगों की भूमिका।
2. रामदेव, ब. (2016). योग, आयुर्वेद और स्वदेशी अर्थनीति. दिव्य प्रकाशन- pp. 150–182. स्वदेशी स्वास्थ्य, उद्योग और आयुर्वेद आधारित अर्थव्यवस्था।
3. भट्टाचार्य, बी. (2013). Indian Economic Nationalism- pp. 135–160. स्वदेशी आंदोलन का आर्थिक विश्लेषण।
4. शर्मा, आर. (2020). स्वदेशी आंदोलन और इसकी आज के समय में अहमियत. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिव्यू, 8(2), 45–58. आधुनिक युग में स्वदेशी आंदोलन की पुनर्परिभाषा।
5. सिंह, पी. (2021). "आत्मनिर्भर भारत: आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के लिए एक रोडमैप।" जर्नल ऑफ इंडियन पब्लिक पॉलिसी, 14(3), 112–129.
6. राव, जी. (2019). "लोकल इंडस्ट्रीज और स्वदेशी का फिर से उभरना।" इकोनॉमिक अफेयर्स जर्नल, 64(1), 78–93.
7. मिश्रा, एस. (2022). "लोकल मैन्युफैक्चरिंग पर मेक इन इंडिया का असर।" इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ इकोनॉमिक्स, 10(4), 225–239.
8. कुमार, ए. (2020). "ग्रामीण भारत में कॉटेज इंडस्ट्रीज और रोजगार पैदा करना।" रूरल डेवलपमेंट क्वार्टरली, 37(2), 55–71.

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN An International Multidisciplinary Research Journal